# Chap 03: मुद्रा और बैंकिंग

**हम पढेंगे:**

*वस्तु विनिमय अर्थ तथा दोष, मुद्रा- अर्थ, परिभाषा, विकास, कार्य, प्रकार गुण व् दोष, मुद्रा पूर्ति, व्यावसायिक बैंक- अर्थ, कार्य तथा साख सृजन की प्रक्रिया, केंद्रीय बैंक - अर्थ, कार्य तथा साख नियंत्रण*

## वस्तु विनिमय प्रणाली (Barter System)

वस्तुओं की वस्तुओं तथा सेवाओं के साथ प्रत्यक्ष अदल बदल की प्रणाली को वस्तु विनिमय प्रणाली कहते हैं।

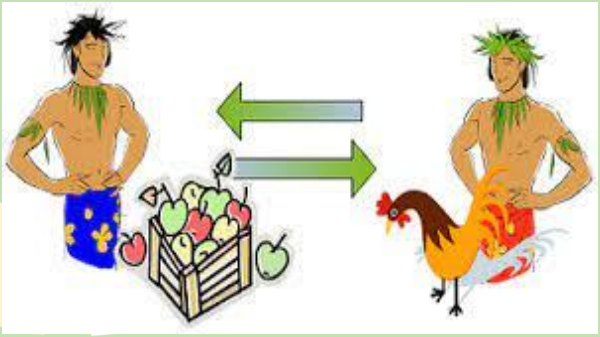

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

### *परिभाषाएं*

***एस आर पी कैंट*** के शब्दों में **"वस्तु विनिमय मुद्रा का विनिमय माध्यम के रूप में प्रयोग किये बिना वस्तुओं का वस्तुओं के लिए प्रत्यक्ष विनिमय है"।**

***एस थॉमस*** के शब्दों मे **"एक वस्तु का दूसरी वस्तु से प्रत्यक्ष विनिमय वस्तु कहलाता है"।**

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद
नकुल ढाली
The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**Subscribe** my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**Follow me:**

**Facebook**- *Nakul Dhali*
**Instagram**- *@dhali_sir*

## वस्तु विनिमय प्रणाली की आवश्यक शर्तें

1. आवश्यकता का सीमित होना (Limited Requirements)
2. सीमित विनिमय क्षेत्र (Limited Exchange Area)
3. आर्थिक रूप से पिछड़ा समाज (Economically Backward Society)
4. मुद्रा का अभाव (Lack of Money)
5. आवश्यकताओं का दोहरा संयोग (Double Coincidence of Wants)
6. यातायात साधनों का अभाव (Lack of Transportation Facilities)

## वस्तु विनिमय प्रणाली के लाभ

1. सरल प्रणाली (Simple System)
2. आपसी सहयोग में वृद्धि (Promotes Mutual Co-Operation)
3. आर्थिक असमानताएँ नहीं (No Economic Disparities)
4. आर्थिक उच्चावचन - स्फीति अथवा अवस्फीति के दोषों से मुक्ति (Relief from Evils of Economic Fluctuations – Inflation and Deflation )
5. सरल अंतरराष्ट्रीय व्यापार संभव (Easy Foreign Trade Possible)

## वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयां
## (Difficulties/ Drawbacks of Barter System)

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

1. दोहरे संयोग का अभाव (Lack of Double Coincidence of Wants)
2. क्रय शक्ति संचय में कठिनाई (Difficulties in Store of Value)
3. सर्वमान्य मूल्य मापक का भाव (Lack of Common Acceptable Unit of Value)
4. वस्तु विभाजन में कठिनाई (Difficulties of Divisibility of Commodities)
5. मूल्य हस्तांतरण का अभाव (Lack of Transfer of Value)
6. भावी भुगतान का अभाव (Lack of Standard of Deferred Payments)

# मुद्रा (Money )

## मुद्रा का शाब्दिक अर्थ:

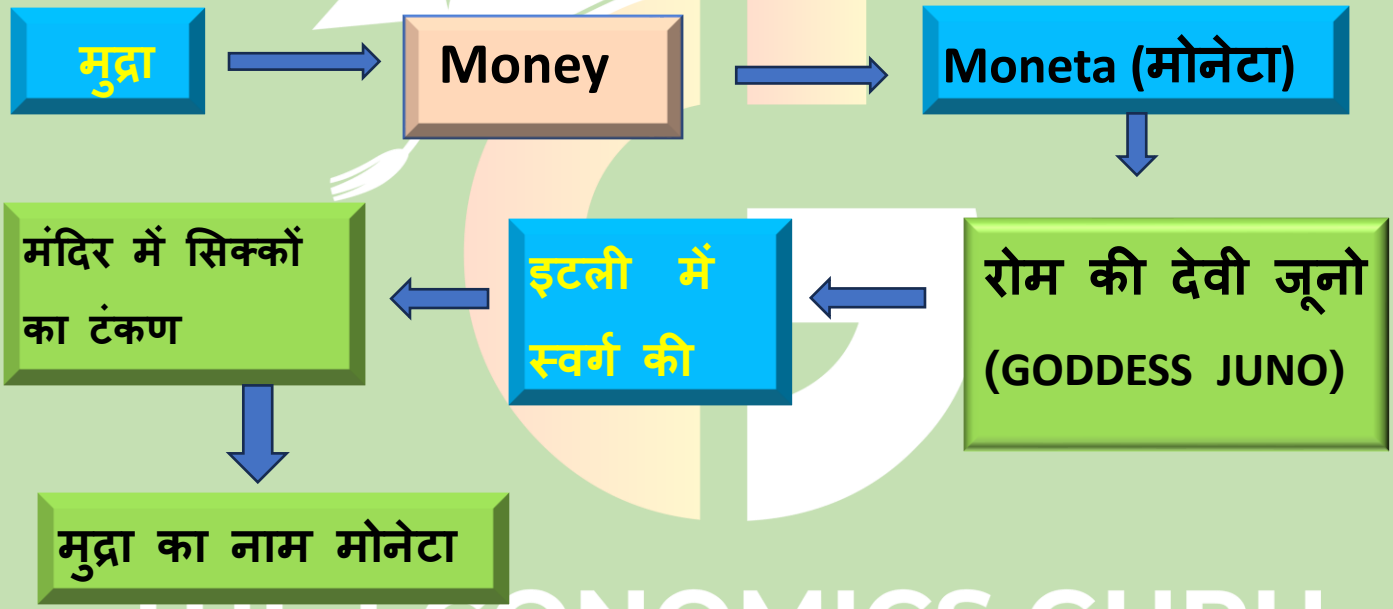


THE ECONOMICS GURU

## मुद्रा के उद्भव का सिद्धांत (Principles of Evolution of Money)

मुद्रा के जन्म के संबंध में मुख्यत: निम्नलिखित दो सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं:

- **मुद्रा का आकस्मिक जन्म सिद्धांत (Spontaneous Development Theory of Money)**
- **मुद्रा का विकास सिद्धांत (Money Development Theory)**

# मुद्रा का आकस्मिक जन्म सिद्धांत
# (Spontaneous Development Theory of Money)

इस सिद्धांत के मुख्य समर्थक ***स्पाल्डिंग*** है।

इस सिद्धांत के अनुसार मुद्रा की खोज मनुष्य ने स्वयं नहीं की बल्कि उसे संयोगवश ही मिल गई है।

जैसे विनिमय का चलन बढ़ता गया, लोगों के सामने कठिनाइयां आती गई और उन्होंने किसी एक वस्तु को विनिमय माध्यम के रूप में प्रयोग करना आरंभ किया, कुछ समय के बाद उससे अच्छी वस्तु मिलने पर उसे मुद्रा के रूप में स्वीकार किया

## मुद्रा का विकास सिद्धांत (Money Development Theory)

इस सिद्धांत के अनुसार, मुद्रा का विकास वस्तु विनिमय की कठिनाइयों को दूर करने के लिए किया गया था। **एडम स्मिथ** के अनुसार विशिष्टीकरण के साथ ये मुद्रा का जन्म हुआ।

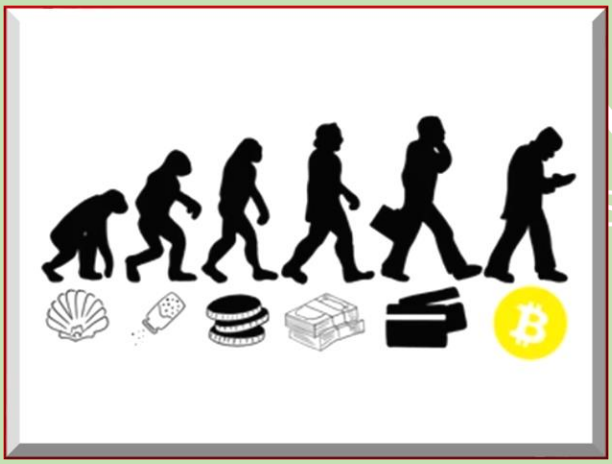

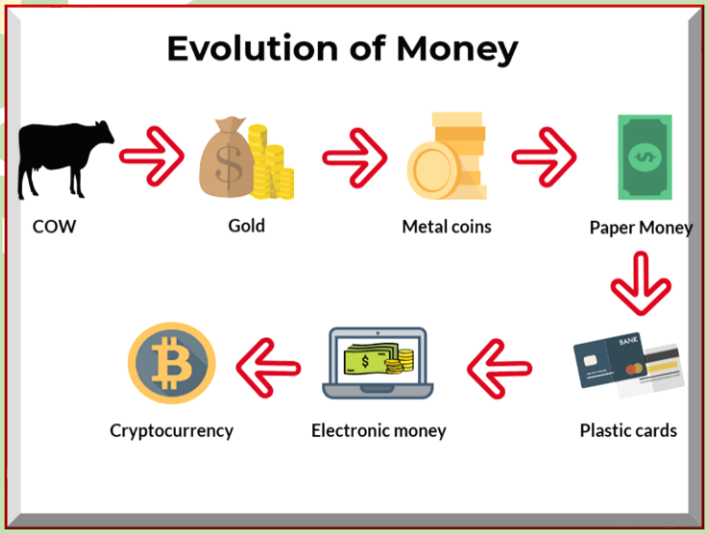

# मुद्रा का अर्थ तथा परिभाषाएं

## मुद्रा का अर्थ

मुद्रा ऐसी वस्तु है जिसे विस्तृत रूप में विनिमय के माध्यम मूल्य के मापक ऋणों के अंतिम भुगतान तथा मूल्य के संचय को साधन के रूप में स्वतंत्र एवं सामान्य रूप से स्वीकार किया जाता है।

## मुद्रा की परिभाषाएं

### कार्यात्मक परिभाषा (Functional Definitions)

**कॉलबॉर्न** के अनुसार, **"मुद्रा वह है जो मूल्य मापक और भुगतान का साधन है"।**

**हार्टले विदर्स** के अनुसार, **"मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करें"।**

**टॉमस** के अनुसार, **"मुद्रा किसी आर्थिक लक्ष्य की प्राप्ति का साधन हैं अर्थात जो दूसरों की वस्तुओं और सेवाओं को प्राप्त करने के लिए दी जाती है"।**

### वैधानिक परिभाषाएं (Legal Definitions)

इसमें जर्मन के प्रो. नैप तथा ब्रिटिश अर्थशास्त्री हॉट्रे शामिल हैं:

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**प्रो. नैप** के अनुसार, **"कोई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित की जाती है, उसे मुद्रा कहते हैं"।**

## सामान्य स्वीकृति के आधार पर (Definitions based on Common Acceptance)

**सेलिगमैन** के अनुसार, **"मुद्रा वह है जिसे सर्वग्रहिता प्राप्त हो"।**

**क्राउथर** के अनुसार, **"मुद्रा वह वस्तु है, जो विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्यत: स्वीकार की जाती हो तथा उसी समय मूल्य मापन तथा मूल्य संचय का कार्य भी करती हो"।**

**कीन्स** के अनुसार, **"मुद्रा वह है जिसको देकर ऋण तथा मूल्य संबंधी भुगतानों को निपटाया जाता है तथा जिसके रूप में सामान्य क्रय शक्ति का संचय किया जाता है"।**

इस प्रकार,

मुद्रा वह वस्तु है जो एक विस्तृत क्षेत्र में विनिमय माध्यम, मूल्य मापन, मूल संचय और ऋणों के भुगतान की मान के रूप में सामान्यता स्वतंत्रपूर्वक, स्वेच्छा से निःसंकोच स्वीकार की जाती है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## इस मुद्रा की विशेषताएँ (Features of Money)

- मुद्रा में सामान्य स्वीकृति होनी चाहिए।
- मुद्रा की स्वीकृति स्वतंत्र तथा अच्छी होनी चाहिए।
- मुद्रा को विनिमय के माध्यम और मूल्यमापन का कार्य साथ साथ करना चाहिए।

# मुद्रा के कार्य (Functions of Money)

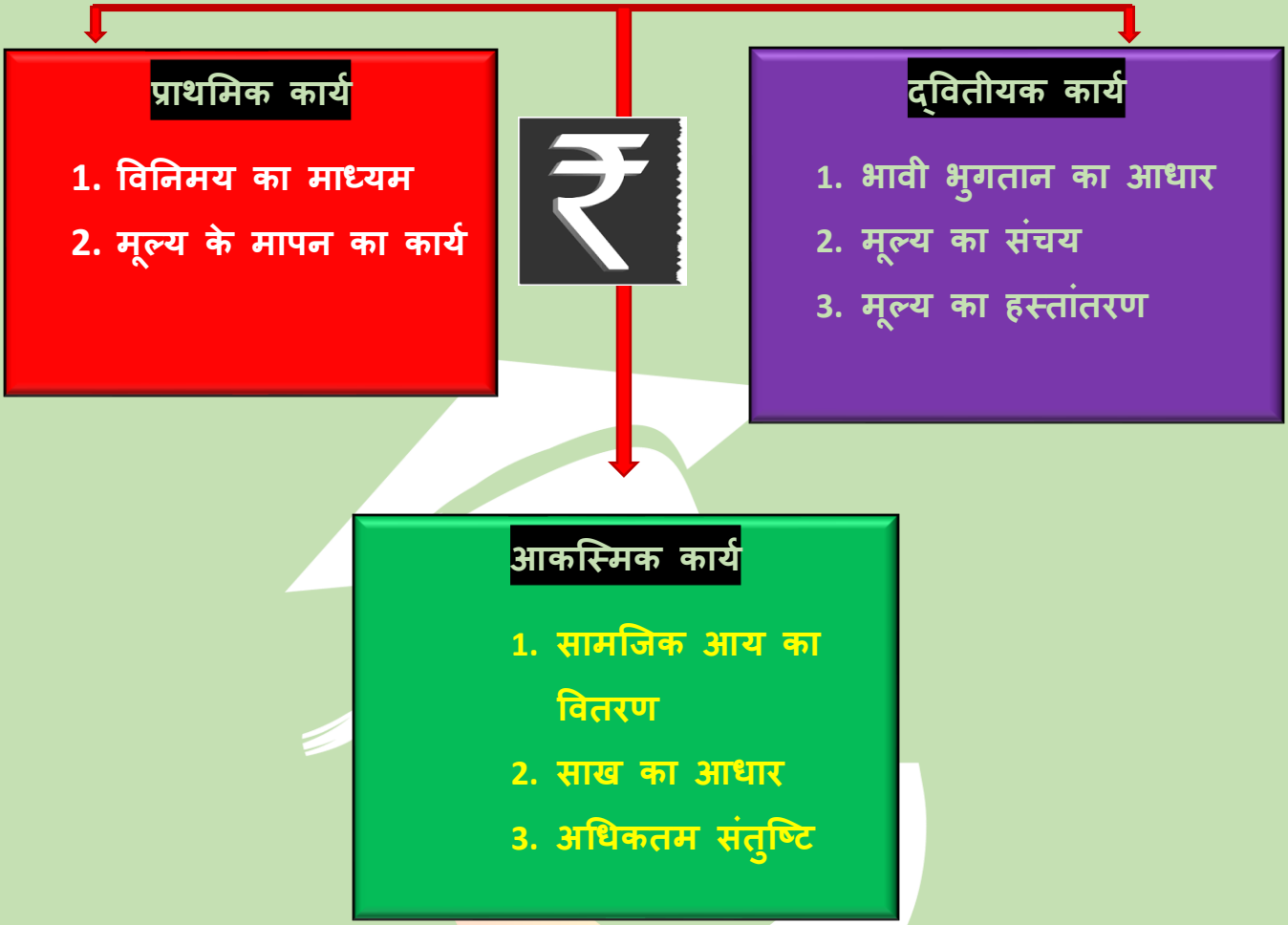


## प्राथमिक कार्य (Primary Functions)

### विनिमय का माध्यम (Medium of Exchange)

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

स्थिर मुद्रा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य विनिमय का माध्यम होता है। अर्थात मुद्रा सभी वस्तुओं और सेवाओं के क्रय विक्रय के माध्यम का कार्य करती है।

## मूल्य के मापन का कार्य (Measurement of Value)

वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है।

## गौण या द्वितीयक कार्य (Secondary Functions)

### स्थगित भुगतान का आधार (Standard of Deferred Payments)

आज संपूर्ण आर्थिक ढांचा साख पर आधारित है। अर्थात अधिकांश लेनदेन उधार में होता है। मुद्रा का एक कार्य यह भी है कि यह भावी भुगतान का एक बहुत बड़ा सुगम साधन है क्योंकि:

- मुद्रा में अन्य वस्तुओं की तुलना में स्थिरता है और इसका मूल्य कम घटता बढ़ता है।
- मुद्रा में सामान्य स्वीकृति का गुण होता है
- मुद्रा में अन्य वस्तुओं की अपेक्षा अधिक टिकाऊपन रहता है।

मुद्रा के इसी कार्य के फलस्वरूप ही अर्थव्यवस्था में ***मुद्रा बाजार*** तथा ***पूंजी बाजार*** का विकास हुआ है।

## मूल्य का संचय (Store of Value)

मनुष्य अपनी आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वर्तमान आय का कुछ भाग भविष्य के लिए संचित करना चाहता है जो कि मुद्रा के दौरान ही संभव है क्योंकि:

- मुद्रा की उपयोगिता नष्ट नहीं होती।
- हर समय इसकी सहायता से बचती है खरीदी जा सकती है।
- मुद्रा के संचय में स्थान भी कम गिरता है।
- उसे बैंक में जमा करके ब्याज भी कमाया जा सकता है।

## मूल्य का हस्तांतरण (Transfer of Value)

मुद्रा द्वारा मूल्य का हस्तांतरण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और एक स्थान से दूसरे स्थान को सरलतापूर्वक किया जा सकता है। क्योंकि यह एक तरल संपत्ति है और इसमें सामान्य स्वीकृति का गुण पाया जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## आकस्मिक कार्य (Contingent Functions)

**प्रो. किनले** ने मुद्रा के कुछ आकस्मिक कार्य बताए है। ये वे कार्य हैं जिन्हें मुद्रा आज के औद्योगिक युग में विशेष रूप से करती है। इस में चार प्रमुख कार्य शामिल हैं।

### राष्ट्रीय आय का वितरण (Distribution of National Income)

आधुनिक युग में उत्पादन सामूहिक होता है अर्थात उसमें भूमि, श्रम, पूंजी तथा साहसी आदि सभी का सहयोग रहता है। अतः उत्पत्ति के सभी साधनों को उसके योगदान के अनुपात में उचित पुरस्कार मिलना चाहिए और मुद्रा द्वारा ही इन पुरस्कारो का अनुमान लगाया जाता है।

### साख का आधार (Basis of Credit)

आधुनिक युग में साख जो व्यवसाय का प्राण है द्रव्य पर ही आधारित है। नकद कोषों के आधार पर ही बैंक साख का निर्माण करते हैं और साख पत्र और बैंक नोट मुद्रा के आधार पर भी चलन में आते हैं।

### अधिकतम संतुष्टि (Maximum Satisfaction )

अधिकतम संतुष्टि मुद्रा के प्रचलन से ही प्रत्येक व्यक्ति को यह अवसर मिलता है कि वह अपनी आय को इस प्रकार व्यय करें ताकि विभिन्न वस्तुओं से मिलने वाली संतुष्टि अधिकतम हो जाये।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

### पूंजी की तरलता में वृद्धि (Increase in Liquidity of Money)

उस मुद्रा एक महत्वपूर्ण परिसंपत्ति है। जिसमें संपत्ति रखी जाती है। अर्थात् सारी संपत्तियों को मुद्रा में परिवर्तित किया जा सकता है।

# मुद्रा और बैंकिंग (Money and Banking)

## मुद्रा के प्रकार

**प्रकृति के आधार पर**

1. वास्तविक मुद्रा
2. हिसाब की मुद्रा

**सामान्य स्वीकृति के आधार पर**

1. विधि ग्राह्य मुद्रा
2. ऐच्छिक मुद्रा

**भौतिक रूप के आधार पर**

1. धातु मुद्रा
2. पत्र मुद्रा
3. साख मुद्रा
4. निकट मुद्रा

## प्रकृति के आधार पर (on the basis of Nature)

### वास्तविक मुद्रा (Actual or Real Money)

इस मुद्रा का अर्थ उन सिक्कों अथवा कागजी नोटों से होता है जिनका देश में वास्तव में चलन होता है।

**प्रोफेसर कीन्स** ने इसे ***मूल्य मुद्रा*** का नाम दिया है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

### हिसाबी या लेखे कि मुद्रा (Money of Account)

यह मुद्रा का वह रूप है जिसमें किसी देश के हिसाब किताब रखे जाते हैं तथा सौदे किए जाते हैं।

उदाहरण के लिए भारत में *रुपया* लेखे की मुद्रा है।

## सामान्य स्वीकृति के आधार पर (On the Basis of General Acceptance)

### विधिग्राह्य मुद्रा (Legal Tender Money):

सरकार द्वारा वैधानिक रूप से ग्राह्य घोषित की जाने वाली मुद्रा को विधिग्राह्य मुद्रा कहा जाता है। विधिग्राह्य मुद्रा को भुगतान के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति बाध्य होता है।

विधिग्राह्य मुद्रा दो प्रकार की होती है-

### सीमित विधिग्राह्य मुद्रा (Limited Legal Tender Money):

वे मुद्राएं जिनको भुगतान के रूप में स्वीकार करने के लिए एक सीमा तक ही किसी को बाध्य किया जा सकता है। जैसे सिक्के पच्चीस पैसे

### असीमित विधि गृह मुद्रा (Unlimited Legal Tender Money)

वह मुद्रा जिसे किसी भी मात्रा में ऋणों तथा सेवाओं के भुगतान करने के लिए दिया अथवा लिया जा सकता है। जैसे: सभी कागजी नोट।

### ऐच्छिक मुद्रा (Optional Money)

वह मुद्रा जिसे स्वीकार करने के लिये कोई भी व्यक्ति बाध्य नहीं होता। यह उसकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वे उन्हें ऋणों एवं सेवाओं के भुगतान के बदले में स्वीकार करे या ना करे।

इसके अंतर्गत विनिमय विपत्र हुंडी, चैक आदि आते हैं।

# भौतिक रूप के आधार पर मुद्रा का वर्गीकरण (On the Basis of Physical Form)

किसी पदार्थ से बनी हुई मुद्रा जैसे:

## धातु मुद्रा (Metallic Money)

किसी धातु से बनी मुद्रा को धातुमुद्रा कहते हैं।

जैसे सोना, चांदी एवं तांबा आदि से बनी मुद्राएं।

धातुमुद्रा मुख्यतः दो प्रकार की होती है।

### प्रमाणिक या मानक मुद्रा (Standard Money):

वहाँ मुद्रा जिसका आंतरिक मूल्य एवं अंकित मूल्य समान होता है, उसे प्रमाणिक मुद्रा कहते हैं।

जैसे: स्वर्ण मुद्राएं, चांदी की मुद्राएं

### सांकेतिक मुद्राएं (Token Money):

वे मुद्राएं जिसमें धातु का मूल्य मुद्रा के मूल्य से कम होता है, उसे सांकेतिक मुद्रा कहते हैं। यह मुद्राएं घटिया या मिश्रित धातुओं से बनी होती है।

## पत्र मुद्रा (Paper Money):

कागज से बनी मुद्राओ को पत्र मुद्रा कहते हैं।

सभी प्रकार के करंसी नोट ₹50, ₹100 ₹500 के नोट।

## साख मुद्रा अथवा बैंक मुद्रा (Credit Money or Bank Money)

पत्र मुद्रा के प्रादुर्भाव के पश्चात ही साख मुद्रा का विकास हुआ। साख मुद्रा को बैंक मुद्रा भी कहते हैं। लोग अपने रोकड़ का एक भाग बैंक में रखते हैं और इसे जब चाहे निकाल सकते हैं या चेक द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को हस्तांतरित करते हैं।

चेक और ड्राफ्ट मूल्य के हस्तांतरण का सबसे सुविधाजनक रूप है, इसलिए इसे बैंक मुद्रा या साख मुद्रा के नाम से जाना जाता है।

## निकट मुद्रा (Near Money)

कुछ ऐसी परिसंपत्तियां हैं जो बहुत तरल है, लेकिन यह मुद्रा की भाँति पूर्णता तरल नहीं है। इन परिसंपत्तियों को तुरंत और मूल्य में हानि के बिना आसानी से मुद्रा में परिवर्तित किया जा सकता है। इसलिए इसे निकट मुद्रा के नाम से जाना जाता है

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INFORMATION | KNOWLEDGE

जैसे विनिमय पत्र, बॉन्ड, बचत सर्टिफिकेट, सरकारी हुंडिया और ऋण पत्र आदि।

# श्रेष्ठ मुद्रा के गुण (Merits of a Good Money)

## उपयोगिता (Utility)

ये धातु ऐसी होनी चाहिए जिससे सभी लोग सरलता से स्वीकार कर सके। साथ ही उसमें विनिमय शक्ति भी होनी चाहिए जैसे सोना या चांदी।

## वहनीयता (Portability)

मुद्रा ऐसी धातु में डाली जानी चाहिए जिससे सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान को स्थानांतरित किया जा सके।

## टिकाऊ (Durable)

अतः मुद्रा ऐसी धातु में डाली जानी चाहिए जिसमें टिकाऊ होने का गुण विद्यमान हों।

## एकरूपता (Homogeneity)

मुद्रा के सभी इकाई या एकरूप होनी चाहिए।

## विभाजकता (Divisibility)

मुद्रा इस प्रकार से होनी चाहिए जिन्हें छोटे छोटे टुकड़ों में विभाजित किया जा सके। और इससे इसकी मूल्य में किसी प्रकार की कमी न आए।

## मूल्य स्थिरता (Stability of Value)

मुद्रा पदार्थ का मूल्य स्थिर होना चाहिए।

## तरलता (Liquidity)

मुद्रा पदार्थ में तरलता का गुण मान होना चाहिए अर्थात पदार्थ ऐसा हो जिसे सरलता से सरल रूप में परिवर्तित किया जा सके।

## मुद्रा के दोष (Evils of Money)

मुद्रा के दोषों को तीन वर्गों में बांटा जाता है।

*आर्थिक दोष, नैतिक दोष, सामाजिक दोष।*

### आर्थिक दोष (Economic Evils)

- ऋण तंत्र को प्रोत्साहन अर्थात उधार लेन देन की आदत को प्रोत्साहन देना
- अति पंजीयन एवं अति उत्पादन को प्रोत्साहन
- मुद्रा के मूल्य में अस्थिरता
- संपत्ति के वितरण में असमानता
- वर्ग संघर्ष का उदय

### नैतिक दोष (Moral Evils)

मुद्रा के विकास के साथ साथ समाज में धोखेबाजी, चोरी, डकैती, हत्या, गबन, विश्वासघात, घूसखोरी, बेईमानी और पाप। जैसे समाज में शोषण वृद्धि का जन्म भी हुआ है।

### सामाजिक दोष (Social Evils)

भौतिकवाद को प्रोत्साहन।

प्रलोभन को प्रोत्साहन।

शोषण की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## मुद्रा की पूर्ति (Money Supply)

मुद्रा पूर्ति से तात्पर्य किसी समय विशेष पर एक देश में प्रचलित वैधानिक मुद्रा की कुल मात्रा से है।

वैधानिक मुद्रा में देश में चलन में आए नोट व सिक्के शामिल हैं, जो कि विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग किए जाते हैं।

इस प्रकार,

**मुद्रा पूर्ति (M) = C + DD**

(C मुद्रा और DD मांग जमाएं)

## मुद्रा पूर्ति के माप (Measures of Money Supply)

***भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)*** ने मुद्रा आपूर्ति के चार वैकल्पिक मापों M1, M2, M3 तथा M4 का प्रयोग किया था।

इन मापों के संबंधित जानकारी अप्रैल 1977 से नियमित रूप से **रिज़र्व बैंक** प्रदान करता है।

## M1 माप

**M1 = C + DD + OD**

C - जनता के पास चलन मुद्राएं (नोट या सिक्के)

DD - व्यापारिक बैंकों के पास जनता की मांग जमाएं

OD - अन्य जमाएं,

- आरबीआई के पास सार्वजनिक वित्तीय संस्थाओं जैसे आईडीबीआई की मांग जमाए।
- आरबीआई के पास विदेशी केंद्रीय बैंक तथा विदेशी सरकारी बैंको की मांग जमाए।
- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे आईएमएफ तथा विश्व बैंक की मांग जमाए

*M1 को संकुचित किया संकीर्ण मुद्रा पूर्ति भी कहा जाता है।*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## M2 माप

**M2 = M1 + SD**

(SD - डाक घर के पास जनता की बचत जमाएं)

## M3 माप

**M3 = M1 + TD/ FD**

(TD सावधि जमाएं / FD स्थिर जमाएं)

## M4 माप

M4 = M3 + डाकघरों की कुल जमाएं (NSC) को छोड़कर।

M4 को वृहद मुद्रा पूर्ति कहा जाता है।

## व्यापारिक बैंक (Commercial Banks)

## अर्थ (Meaning)

व्यापारिक बैंक वह संस्था है जो जनता से धन, जमा करने के उद्देश्य से स्वीकार करता है तथा उनके मांगने पर लौटाता है एवं जनता की आवश्यकता पर उन्हें ऋण (लोन) भी प्रदान करता है।

## व्यापारिक बैंक की परिभाषाएं (Definitions of Commercial Banks)

**गिल्बर्ट** के अनुसार, "बैंक पूंजी अथवा सही शब्दों में मुद्रा का व्यवसाय है"।

**प्रो. किनले** के अनुसार, "बैंक एक ऐसी संस्था है जो लोगों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए उनकी आवश्यकता के अनुसार ऋण देती है तथा लोग अपना पैसा उसमें जमा करते हैं जब उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं होती"।

## भारतीय बैंकिंग नियमन अधिनियम

"बैंकिंग से तात्पर्य ऋण देने अथवा विनियोजन के लिए जनता से धन जमा करना है, जो मांग करने पर लौटाया जा सकता है तथा चेक, ड्राफ्ट अथवा अन्य प्रकार की आज्ञा द्वारा निकाला जा सकता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

संक्षेप में,

**व्यापारिक बैंक भी बैंक के जो लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से मुद्रा तथा साख का व्यापार करती है।**

## व्यापारिक बैंक की विशेषताएँ (Characteristics of Commercial Banks)

- व्यापारिक बैंक मुद्रा में लेनदेन करता है।
- व्यापारिक बैंक जनता से जमा ये ऋण देने के उद्देश्य से स्वीकार करता है।
- व्यापारिक बैंक का उद्देश्य लाभ अर्जन होता है।
- व्यापारिक बैंक साख में व्यवहार करते हैं और इनमें साख निर्माण की योग्यता होती है।
- व्यापारिक बैंक जैसा कि नाम हैं, इसकी प्रकृति पूर्णता व्यावसायिक होती है।

## व्यापारिक बैंको के कार्य (Function of Commercial Banks)

- **प्राथमिक / मुख्य कार्य**
- **द्वितीयक / गौण कार्य**
- **सामाजिक कार्य**

THE ECONOMICS GURU

## व्यापारिक बैंको के प्राथमिक कार्य

- जमा स्वीकार करना
- ऋण प्रदान करना
- साख का सृजन

## जमा स्वीकार करना (Accepting Deposits)

बैंक जनता के धन को जमा करता है। लोग अपनी सुविधा और शक्ति के अनुसार निम्नलिखित खातों में रुपया जमा कर सकते हैं।

1. चालू जमा (Current Deposits)
2. बचत खाता (Saving Account)
3. सावधि खाता (Fixed Deposits)
4. आवर्ती जमा खाता (Recurring Deposits)

## ऋण प्रदान करना (Granting Loans)

बैंको का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य ऋण प्रदान करना है। वास्तव में जमा लेना या ऋण देना ये दोनों स्तंभ हैं जिन पर आज कल के बैंको का ढांचा खड़ा रहता है।

ऋण प्राय: उत्पादक कार्यों के लिए दिए जाते हैं और इन पर वसूल की जाने वाली ब्याज की दर उससे अधिक होती है जो बैंक जमा कराने वाले व्यक्तियों को देता है। बैंक मुख्यता निम्नलिखित तरीकों से ऋण देता है।

1. नकद साख (Cash Credit)
2. अधिविकर्ष या ओवरड्राफ्ट (Overdraft)
3. ऋण तथा अग्रिम (Loans and Advances)
4. सरकारी प्रतिभूतियों में विनियोग (Investment in Government Securities)
5. बिनिमय पत्रों की कटौती करना (Discounting of the Bills of Exchange)

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

# साख निर्माण (Credit Creation)

आजकल बैंको का एक मुख्य कार्य सात निर्माण करना है। बैंक अपनी प्रारंभिक जमा से अधिक रुपया उधार देकर साफ का निर्माण करते हैं।

## द्वितीयक कार्य या गौण कार्य (Secondary Functions)

### एजेंसी संबंधी सेवाएं (Agencies Functions)

1.साख पत्रों के भुगतान का संग्रह
2.ग्राहकों की ओर से भुगतान
3.भुगतान संग्रह करना
4.प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय करना
5.धन का स्थानांतरण करना
6.ट्रस्ट आदि का कार्य करना
7.विदेशी मुद्रा का क्रय विक्रय करना
8.संदर्भ पत्र जारी करना

### सामान्य उपयोगिता वाले कार्य (Functions of General Utility)

1.लॉकर सेवाएं प्रदान करना
2.यात्री चक एवं साख प्रमाण पत्रों का प्रदान करना
3.वस्तुओं के वाहन में सहायता
4.व्यापारी सूचना व आंकड़े एकत्रित करना।
5.ऋणों का अभिगोपन करना
6.विदेशी विनिमय की व्यवस्था करना
7.एटीएम कार्ड, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड आदि की व्यवस्था करना

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

# व्यापारिक बैंक द्वारा साख निर्माण
# (Credit Creation by Commercial Banks)

आधुनिक बैंको का महत्वपूर्ण कार्य साख का निर्माण करना है।

इसीलिए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **शेयर्स** कहते हैं कि **"बैंक केवल मुद्रा जुटाने वाली संस्था नहीं है, वरन मुद्रा का निर्माता भी हैं"**

## साख मुद्रा का अर्थ (Meaning of Credit Money)

बैंक जिस मुद्रा का निर्माण करते है उसे बैंक मुद्रा या साख मुद्रा कहते हैं।

बैंक मुद्रा या साख मुद्रा का संचालन व्यापारिक बैंको द्वारा किया जाता है और इसका संबंध बैंको में स्थित जनता की उस जमा से है जिसपर लिखे गए चेकों का प्रयोग मुद्रा के रूप में किया जाता है।

## बैंको के पास दो प्रकार की जमाए होती है:

### प्रारंभिक जमा (Primary Deposits)

वह जमाराशियां, जो नकदी या वास्तविक मुद्रा के रूप में जमाकर्ताओं द्वारा बैंक में जमा की जाती है। इसे प्रत्यक्ष जमायें कहते हैं।

THE ECONOMICS GURU

### व्युत्पन्न जमा (Derivative Deposits)

जब कोई बैंक किसी को ऋण अथवा अग्रिम देता है। अथवा प्रतिभूतियों को खरीदकर अपने धन का विनियोग करता है तो ऋण अथवा विनियोग की रकम नकद साख खाते में लिख दी जाती है, जिसे चेक द्वारा निकाला जा सकता है। इस प्रकार उत्पन्न होने वाली जमा राशि व्युत्पन्न जमा साख या द्वितीयक जमा कहलाती है।

## केंद्रीय बैंक के कार्य

- नोट जारी करना
- बैंकों का बैंक
- सरकार का बैंकर
- अंतिम ऋणदाता
- विदेशी विनिमय कोशों का संरक्षण
- समाशोधन गृह का कार्य
- साख का नियंत्रण

## केंद्रीय बैंक साख का नियंत्रण (Credit Control by Central Bank)

THE ECONOMICS GURU

**परिमाणात्मक/ मात्रात्मक साख नियंत्रण**

**Quantiitative Method**

**गुणात्मक/ चयनात्मक साख नियंत्रण**

**Qualitative Method**

## परिमाणात्मक साख नियंत्रण (Quantitative Credit- Control Methods)

परिमाणात्मक साख नियंत्रण के अंतर्गत बैंको के नकद कोषों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डाला जाता हैं, परिमाणात्मक नियंत्रण कहलाते हैं।

1. बैंक दर नीति
2. खुले बाजार की क्रियाएं
3. नकद कोष अनुपात
4. सांविधिक तरलता अनुपात
5. रेपो रेट
6. रिवर्स रेपो रेट

### बैंक दर नीति (Bank Rate Policy)

बैंक दर वह दर है जिसपर केंद्रीय बैंक सदस्य बैंको के प्रथम श्रेणी के व्यापारिक बिलों की पुनर कटौती करता है और उन्हें ऋण देता है

*साख के विस्तार* के लिए केंद्रीय बैंक बैंक दर को घटा देता है। और इसके विपरीत, *साख के संकुचन* के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा बैंक दर को बढ़ा दिया जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

### खुले बाजार की क्रियाएं (Open Market Operations)

साथ नियंत्रण में खुले बाजार की क्रि याओं से अभिप्राय केंद्रीय बैंक द्वारा मुद्रा बाजार में सरकारी एवं निजी संस्थाओं की प्रतिभूतियों के क्रय विक्रय से होता है।

*साख के संकुचन* के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा मुद्रा बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों का विक्रय किया जाता है इसके विपरीत *साख के विस्तार* के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा प्रतिभूतियों को वापस खरीदना आरंभ कर दिया जाता है।

## नकद कोष अनुपात ( Cash Reserve Ratio)

उस नकद को अनुपात वह अनुपात है जिसमें प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपनी जमा राशि का एक निश्चित प्रतिशत कानूनी रूप से केंद्रीय बैंक के पास नकद कोष के रूप में जमा करना पड़ता है। इसे न्यूनतम नकद कोष भी कहा जाता है।

***साख के विस्तार*** के लिए नकद कोष अनुपात को घटा दिया जाता है जबकि ***साख संकुचन*** के लिए नकद कोष को बढ़ा दिया जाता है।

## सांविधिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio)

प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपनी कुल जमा का एक निश्चित अनुपात स्वयं के पास रखना पड़ता है और यह तरल रूप में हो सकता है।

***साख के विस्तार*** के लिए तरल कोषों के अनुपात में कमी कर दिया जाता है। जबकि ***साख के संकुचन*** के लिए तरल कोषों के अनुपात में वृद्धि किया जाता है

## चयनात्मक साख का नियंत्रण (Qualitative or Selective Credit Control Method)

वह साख नियंत्रण जो कुछ विशेष उद्देश्यों के लिए दी जाने वाली तथा विशेष बैंको द्वारा दी जाने वाली साख की मात्रा को नियमित करता है। इसे गुणात्मक साख नियंत्रण भी कहा जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

इसके अंतर्गत निम्नलिखित विधियाँ शामिल हैं:

1. **सीमांत आवशयकताओं या मार्जिन में परिवर्तन**
2. **साख की राशनिंग**
3. **उपभोक्ता साख पर नियंत्रण**
4. **प्रत्यक्ष कार्यवाही**

## सीमांत आवश्यकताओं या मार्जिन में परिवर्तन

केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंक को सट्टे के कार्यों के लिए प्रतिभूतियों की जमानत पर दिए जाने वाले ऋण की सीमा या मार्जिन निर्धारित करता है।

*प्रतिभूतियों के मूल्य और उधार दी जाने वाली राशि के अंतर को सीमा या मार्जिन कहते हैं।*

***साख के संकुचन*** करने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा मार्जिन आवश्यकता को बढ़ा दिया जाता है, जबकि ***साख के विस्तार*** के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा मार्जिन आवश्यकता को कम कर दिया जाता है।

## साख की राशनिंग (Rationing of Credit)

किसी देश का केंद्रीय बैंक अंतिम ऋणदाता होता है। इसीलिए वह आवश्यक समझे तो साख पर नियंत्रण करने के लिए साख की राशनिंग भी कर सकता है और ये चार प्रकार से किया जा सकता है।

1. केंद्रीय बैंक विभिन्न बैंको को दिए जाने वाले ऋण में कमी कर सकता है।
2. केंद्रीय बैंक विभिन्न बैंको को दी जाने वाली साख का कोटा निश्चित कर सकता है
3. किसी विशेष बैंक को रुपया उधार देने से इंकार कर देता है।
4. केंद्रीय बैंक उद्योगों और व्यवसायों को दी जाने वाली साख की सीमा निश्चित कर सकता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## उपभोक्ता साख पर नियंत्रण (Regulation on Consumer's Credit)

इसके अंतर्गत टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं को दी जाने वाली साख का नियंत्रण किया जाता है और इसका प्रयोग सबसे पहले अमेरिका में किया गया था। कई देशों में टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएं उधार या किराया खरीद प्रणाली के आधार पर बेची जाती हैं। और इसका भुगतान किस्तों में किया जाता है।

***साख के विस्तार*** के लिए उपभोक्ता साख पर नियंत्रण कम किया जाता है जबकि ***साख के संकुचन*** के लिए उपभोक्ता साख पर नियंत्रण बढ़ा दिया जाता है।

## प्रत्यक्ष कार्रवाई ( Direct Action)

प्रत्यक्ष क्रिया की रीति इसे आशय प्रति विरोधी कार्यों से होता है। जब केंद्रीय बैंक यह देखता है कि कोई बैंक उसकी नीति के विरुद्ध कार्य कर रहा है, तो केन्द्रीय बैंक प्रत्यक्ष कार्रवाई करता है।

ये सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार से हो सकता है।

जैसे

1. बैंक केंद्रीय बैंक की नीती में सहयोग न करें तो उनके बिलों को भुनाने से इनकार करना।
2. उन्हें ऋण ना देना।
3. आर्थिक दंड लगाना।
4. लाइसेंस निष्कासित करना आदि।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

THE ECONOMICS GURU

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

**Subscribe** my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

**Follow me:**

**Facebook**- *Nakul Dhali*

**Instagram**- *@dhali_sir*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE